28 जुलाई से 3 अगस्त तक शहीदी सप्ताह सफल बनाओ!

वीर शहीदों के खून से सने सुर्ख लाल झंडे को ऊंचा उठाये रखेंगे।
उनके सपनों को साकार करने आखिरी सांस तक संघर्ष में डटे रहेंगे।

दण्डकारण्य की पार्टी कतारों, पीएलजीए के कमांडरों व लाल योद्धाओं एवं प्यारे लोगों!

भारत की क्रांति के महान नेता, हमारी पार्टी के संस्थापक एवं प्यारे शहीद कामरेड चारू मजुमदार एवं कामरेड कन्हाई चटर्जी के दर्शाये दीर्घकालीन जन युद्ध के रास्ते पर अमल करते हुए भारत की नवजनवादी क्रांति को सफल बनाने नक्सलबाड़ी से लेकर आज तक दस हजार से भी ज्यादा क्रांतिकारियों व क्रांतिकारी जनता ने पीड़ित जनता के मुक्ति संग्राम में अपना गरम खून बहाया।। 28 जुलाई, 2013 से लेकर इस साल भर में देश के विभिन्न संघर्ष इलाकों– दण्डकारण्य, बिहार–झारखंड, उत्तर तेलंगाना, एओबी, ओडिशा, पश्चिम बंगाल, असोम, आदि में सौ से ज्यादा प्रिय कामरेडों ने सर्वोच्च कुरबानी दी। जबकि दण्डकारण्य में इस दौरान 40 कामरेडों ने अपनी जानें कुरबान की। मजदूर वर्ग के इन उत्तम संतानों में पार्टी नेतृत्व से लेकर पीएलजीए के कमांडरों व लाल योद्धाओं सहित क्रांतिकारी जनता भी शामिल है। आगामी 28 जुलाई से 3 अगस्त तक आयोजित होने वाले शहीदी सप्ताह के दौरान इन तमाम कामरेडों को सिर झुकाकर विनम्रतापूर्वक श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे। उनकी यादों को ताजा व साझा करते हुए लक्ष्य को हासिल करने तक उनकी कुरबानियों की राह पर दृढ़तापूर्वक आगे बढ़ने का संकल्प लेंगे।

देश में मजबूती से अपनी जड़े जमाये संशोधनवाद पर जबर्दस्त प्रहार करके भारत की नवजनवादी क्रांति की सही दिशा तय करने वाले कामरेड चारू मजुमदार एवं कामरेड कन्हाई चटर्जी को सबसे पहले श्रद्धासुमन अर्पित करेंगे। नक्सलबाड़ी के समय से लेकर अपनी आखिरी सांस तक दीर्घकालीन जनयुद्ध की दिशा को ऊंचा उठाये रखने वाले, संशोधनवाद के खिलाफ अविराम संघर्ष करते हुए भाकपा (मा–ले) नक्सलबाड़ी की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले कामरेड एसए रऊफ जिनकी गंभीर अस्वस्थता के कारण 9 फरवरी को शहादत हुई, को इस मौके पर लाल सलाम् पेश करेंगे। पिछले 1 मई को भाकपा (माओवादी) एवं भाकपा (मा–ले) नक्सलबाड़ी के विलय की घोषणा का उल्लेख करना यहां लाजिमी होगा।

वीर शहीदों की कुरबानियों के जरिए ही क्रांतिकारी आन्दोलन ने कई उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल की। दण्डकारण्य, बिहार– झारखंड में पंचायत स्तर से लेकर डिविजन स्तर तक जन राज सत्ता के अंग–क्रांतिकारी जनताना सरकारों का गठन होकर जनता के हाथों सत्ता आ गया है। आम जनता की लूट, शोषण, विस्थापन व विनाश पर आधारित शोषक–शासकों के विकास के नमूने को लात मारकर स्वावलंबन पर आधारित असली विकास की दिशा में आगे बढ़ते हुए यहां की संघर्षरत जनता क्रांतिकारी जनताना सरकारों को मजबूत कर रही है एवं उनका विस्तार कर रही है।

आज साम्राज्यवाद का आर्थिक संकट लगातार गहराता जा रहा है। उससे बाहर आने के लिए वह पिछड़े देशों के संसाधनों को लूटने के अपने प्रयासों को तेज कर रहा है। हमारे देश के दलाल शासक पहले से ही साम्राज्यवादियों के हितों के अनुरूप देश की नीतियां बदल कर उनके सामने नतमस्तक हो गये हैं। हमारे देश के छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, बिहार–झारखंड, ओडिशा, पश्चिम बंगाल, आन्ध्रप्रदेश, तेलंगाना आदि राज्यों में मौजूद अकूत प्राकृतिक संपदाओं की लूट में बाधा बने क्रांतिकारी आन्दोलन का सफाया अब शोषक–शासकों की पहली प्राथमिकता बन गया है। बड़े बांधों, बड़े खदानों व बड़े उद्योगों के खिलाफ हमारी पार्टी के नेतृत्व में यहां लंबे समय से जन संघर्ष जारी हैं। रावघाट खदान को बचाने के लिए शहीद कामरेड सुकदेव के नेतृत्व में प्रारंभ संघर्ष आज भी जारी है। इन संघर्षों के फलस्वरूप ही कारपोरेट कंपनियों की योजनाएं आगे नहीं बढ़ रही हैं।

शोषक–शासक वर्गों के द्वारा देश की संघर्षरत शोषित व उत्पीड़ित जनता, उसका नेतृत्व करने वाली पार्टी,, पीएलजीए एवं जन राज सत्ता के अंग–क्रांतिकारी जनताना सरकारों के सफाये के लिए विगत कुछ सालों से अन्यायपूर्ण युद्ध–ऑपरेशन ग्रीनहंट चलाया जा रहा है। साम्राज्यवादियों खासकर, अमेरिकी साम्राज्यवादियों की देखरेख में यह फासीवादी चौतरफा सैनिक हमला दिन–ब–दिन व्यापक व तेज होता जा रहा है। हाल ही में सत्तारूढ़ नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली एनडीए सरकार इसे और तेज करने की योजना पर अमल कर रही है। विगत साल भर के दमन में दसियों कामरेड शहीद हो गये हैं। इनमें से कुछेक कामरेडों की दुश्मन ने फर्जी मुठभेड़ों में क्रूरतापूर्वक हत्या की। जबकि कुछ और कामरेडों ने दुश्मन के साथ वीरतापूर्वक लड़ते हुए अपने प्राणों को न्योछावर किया। अस्वस्थता और दुर्घटनाओं के चलते भी कुछ कामरेड शहीद हुए हैं।

17 फरवरी को बेतकाटी गांव के पास उत्तर गढ़चिरोली–गोंदिया डिविजन के सात कामरेडों की दुश्मन ने बर्बरतापूर्वक हत्या की। इनमें डीवीसीएम कामरेड लालसू, एसी स्तर के कामरेड्स सुनिल, पुन्नी, वीरू, नवीन, श्यामको एवं पीपीसी सदस्य कामरेड राजेश शामिल हैं। ये कामरेड दुश्मन के विश्वासघाती दांव–पेंच के शिकार होकर शहीद हुए हैं। इनके अलावा एरिया क्रांतिकारी जनताना सरकार की अध्यक्षा कामरेड धन्नी, कामरेड रामसु (पार्टी सदस्य), कामरेड रीता (पीपीसीएम), कामरेड सरिता (पार्टी सदस्य) दुश्मन के साथ लोहा लेते हुए शहीद हो गयीं।

तेलंगाना, दक्षिण बस्तर की सरहद में दुश्मन के खिलाफ साहस के साथ संघर्ष करते हुए खम्मम जिला कमेटी सदस्य कामरेड नरेश, एवं मिलिशिया सदस्य कामरेड रामू शहीद हुए।

दक्षिण बस्तर डिविजन में दुश्मन का प्रतिरोध करते हुए कामरेड अपका शांति, एरिया मिलिशिया कमांडर–इन–चीफ माडवी सोमाल (पीएम), मूसाकि अड़माल (पीएलजीए सदस्य), जोगाल (मिलिशिया), कामरेड ककेम मुन्नी (मिलिशिया), पीएल–4 की

सदस्या कामरेड मुसाकि पायके शहीद हुईं। पश्चिम बस्तर डिविजन में दुश्मन के साथ हुई मुठभेड़ में कामरेड ताति सन्नू (कंपनी–2 का सदस्य) एवं कामरेड पामुला चंदू (गार्ड) वीरगति को प्राप्त हुए। गंगालूर की साहसिक सैनिक कार्रवाई में पोट्टामि बदरू (मिलिशिया) शहीद हो गये। दुश्मन के अभियान का डटकर मुकाबला करते हुए जन मिलिशिया कमांडर कामरेड फागू ने अपनी जान की कुरबानी दी। पीएलजीए की प्रतिरोधी कार्रवाईयों के दौरान दुर्घटनावश कामरेड राजेश (मिलिशिया) ने शहादत को पाया।

पूर्व बस्तर में दुश्मन के हमलों में सीनियर एसीएम कामरेड दरबार मंडावी, कामरेड ज्योति (गार्ड), कामरेड जानो (मिलिशिया) शहीद हुईं। कामरेड रोण्डा (गार्ड) बरगढ़ जिले के गंधमर्दन पहाड़ी पर हुई मुठभेड़ में शहीद हो गये।

विगत साल भर में फर्जी मुठभेड़ों में कई कामरेडों ने अपनी जानें कुरबान की। पूर्व बस्तर में डिविजन कार्रवाई दस्ते के कामरेड विजय, पश्चिम बस्तर डिविजन के नेशनल पार्क एरिया के गरतुल गांव के पास नवीन, मासे, सन्नु यातनाएं देने के बाद हत्या की गयी। कामरेड मासे के साथ दुष्कर्म किया गया था। गंगालूर एरिया के तोड़का गांव के ग्रामीण आदिवासी किसान ताति बुदू , ईसुलनार गांव के कुरसम लच्छू (मिलिशिया) को पकड़कर बाद में उनकी हत्या की गयी। दक्षिण बस्तर में आन्ध्रप्रदेश–छत्तीसगढ़ राज्यों के संयुक्त बलों के ऑपरेशनों के दौरान दुश्मन की अंधाधुंध फायरिंग में मड़काम उंगाल एवं काका धर्माल शहीद हो गये। माड़ डिविजन के कारका जंगल में तीन साधारण आदिवासी किसानों एवं उत्तर बस्तर डिविजन के कोयलीबेड़ा एरिया के आमाखड्डा गांव के दो आदिवासी किसान तुलसीराम दर्रो एवं सोमारू को पकड़कर गोली मार दी गयी।

करीबन तीन दशक तक क्रांतिकारी आन्दोलन में दृढ़तापूर्वक काम करने वाली आदर्शवान वरिष्ठ महिला कम्यूनिस्ट योद्धा कामरेड गज्जला सरोजा (शहीदा, अमरा) केंसर बीमारी की वजह से 11 दिसंबर को शहीद हुईं। दक्षिण बस्तर के जेगुरगुण्डा एलजीएस कमांडर कामरेड कुर्सम बोज्जाल, एवं एसजेडसी स्टाफ कामरेड राकेश (मोनु) सांप के डंसने से शहीद हो गये। कामरेड अमिता की दुखद मौत हुई। गिरफ्तार होकर जेल में सजा काट रहे कामरेड रामलाल जगदलपुर जेल में व्याप्त अमानवीय परिस्थितियों के चलते गंभीर अस्वस्थता के शिकार होकर जेल अधिकारियों की आपराधिक लापरवाही की वजह से शहीद हो गये।

आन्ध्रप्रदेश राज्य में 4 जुलाई, 2013 को वरिष्ठ माओवादी नेता कामरेड गण्टि प्रसादम की जघन्य हत्या करने वाले शासक वर्गों ने 25 दिसंबर को पृथक जनवादी तेलंगाना राज्य आन्दोलन के नेता कामरेड आकुला भूमय्या की हत्या करवाई।

एओबी के क्रांतिकारी आन्दोलन के कई साथी इस साल भर में शहीद हुए हैं। खासकर लंबे समय से क्रांतिकारी आन्दोलन को अपनी सेवाएं देते आये वरिष्ठ नेता कामरेड मंगन्ना (डीवीसीएम), कामरेड डुंब्री को दुश्मन ने एक साजिश के तहत पकड़कर उनकी हत्या की। कामरेड शिरीषा (एसीएम) की एक दुर्घटना में शहादत हुई। विस्पोटक दुर्घटना में कॉ. माधुरी (गड़चिरोली) व कॉ. सुरेश (गंगालूर) शहीद होगये।

शासक वर्ग दमन के जरिए आन्दोलनों को अस्थायी रूप से नुकसान पहुंचा सकते हैं। दुनिया के क्रांतिकारी आन्दोलनों के इतिहास ने यह साबित कर दिया है कि कोई भी प्रतिक्रियावादी ताकत जनान्दोलनों को हमेशा के लिए खत्म नहीं कर सकती है और क्रांतिकारी जनान्दोलनों की जीत को कभी नहीं रोक सकती है। जब तक दुनिया में शोषण एवं उत्पीड़न जारी रहेंगे तब तक जन विद्रोह व जन संघर्ष उठते रहेंगे। सैकड़ों करोड़ पीड़ित लोग जिस दिन एक हो जायेंगे, मुठ्ठीभर शोषकों को दुनिया की कोई भी प्रतिक्रियावादी सेना बचा नहीं सकती है। अत्याधुनिक हथियार चाहे जितने भी हों उन्हें सुरक्षा प्रदान नहीं कर सकते। अंतिम जीत जनता की ही होगी। जनता ही इतिहास की निर्माता है। जनता पर इस अटूट विश्वास के साथ ही कई योद्धा जनयुद्ध में अनगिनत कुरबानियां दे रहे हैं। उनकी कुरबानियों की विरासत को दृढ़तापूर्वक अपनाना होगा। शहीद योद्धाओं के आदर्शों पर बेहिचक अमल करना होगा। उनके सपनों को साकार करने, एवं उनके अधूरे आशयों को पूरा करने हमें अपनी सारी ताकत झोंकनी होगी। इसके उल्टे अस्थायी नुक्सानों से घबराकर, उन्हें स्थायी समझकर दिग्भ्रमित होने व जनता पर विश्वास खोकर, कम्यूनिस्ट मूल्यों व आदर्शों को तिलांजलि देकर, कुरबानी से डरकर दुश्मन के सामने घुटने टेकने का मतलब है, पीड़ित जनता के साथ गद्दारी। आत्म समर्पण से तीखा नफरत करने, आत्म सम्मान के साथ जीने व उसके लिए लड़ने, वीर शहीदों के खून से रंगे सुर्ख लाल झंडे को हमेशा व आखिरी दम तक ऊंचा उठाये रखने का शपथ लेंगे। शहीदों के स्मृति सप्ताह के दौरान गांव–गांव में शहीदों की याद में स्मारकों का निर्माण करेंगे। सभा–सम्मेलनों का आयोजन करके उनकी कुरबानियों, वीरता एवं उनके आदर्शों को याद करेंगे। उनको अपनायेंगे। उन पर अमल करेंगे। शहीदों के रास्ते पर आगे कदम बढ़ायेंगे। हमारे प्यारे शहीद योद्धाओं को दी जाने वाली सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी।

- **कामरेड चारू मजुमदार एवं कामरेड कन्हाई चटर्जी को लाल–लाल सलाम्।**
- **क्रांतिकारी जनयुद्ध में जान कुरबान करने वाले तमाम वीर शहीदों को लाल–लाल सलाम्।**
- **दुश्मन की विश्वासघाती एलआईसी युद्ध नीति का मुकाबला करते हुए सभी स्तरों के पार्टी नेतृत्व की रक्षा करेंगे। नुकसानों को कम करेंगे।**
- **भारत की नवजनवादी क्रांति–जिंदाबाद**

क्रांतिकारी अभिनंदन के साथ...

दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)

10 जून 2014